CHAPTER 12

बाज़ार दर्शन

PAGE 92, अभ्यास - पाठ केसाथ

12:1:12: प्रश्न - अभ्यास - पाठ के साथ:1

बाज़ार का जादू चढ़ने और उतरने पर मनुष्य पर क्या -क्या असर पड़ता है?

उत्तर: बाजार का जादू चढ़ने के कारण मनुष्य आकर्षक वस्तुएं के जाल में फंस जाता है। बाजार के आकर्षण में फंस कर लोग ऐसी वस्तुएं खरीद लेते है जिनकी उनके जीवन में आवश्यकता नहीं होती है। बाजार की चकाचौंध में फंस कर कुछ वस्तुएं खरीदने के बाद लोंगो को अहसास होता है की जो वस्तु उन्होंने खरीदी है वो उनके लिए परेशानी का कारण बनती है।

12:1:12: प्रश्न - अभ्यास - पाठ के साथ:2

बाज़ार में भगत जी के व्यक्तित्व का कौन-सा सशक्त पहलू

उभरकर आता है? क्या आपकी नज़र में उनका आचरण समाज में शांति-स्थापित करने में मददगार हो सकता है?

उत्तर: बाज़ार में भगत जी के व्यक्तित्व का जो पहलू उभरकर सामने आता है वह है उनका अपने मन पर पूर्ण नियंत्रण होना। वे बाजार की चकाचौंध से आकर्षित नहीं होते थे। उन्हें पता होता है की उन्हें क्या खरीदना है। उन्हें अगर जीरा और काला नमक खरीदना होता था तो वे सीधे पंसारी की दुकान पर जाकर सिर्फ काला नमक और जीरा खरीद कर चले आते थे। बाजार की चकाचौंध से भ्रमित नहीं होते थे। भगत जैसे व्यक्तियों बाजार को सार्थकता प्रदान करते है।

12:1:12:प्रश्न - अभ्यास - पाठ के साथ:3

'बाज़ारूपन' से क्या तात्पर्य है? किस प्रकार के व्यक्ति बाज़ार को सार्थकता प्रदान करते हैं अथवा बाज़ार की सार्थकता किसमें है?

उत्तर: बाजार में होने वाले दिखावे को बाज़ारूपन कहते है। बाजार में बेकार की चीजों को आकर्षक बनाकर बेचना

बाज़ारूपन कहलाता है। जो विक्रेता अपनी दुकानों में चमक दमक नहीं रखते तथा अनावश्यक चीजें नहीं बेचते है तथा वे ग्राहक जो आवश्यक चींजे नहीं खरीदते तथा बाज़ारूपन प्रभावित नहीं होते है बाजार को सार्थकता प्रदान करते है।

12:1:12:प्रश्न - अभ्यास - पाठ के साथ:4

बाज़ार किसी का लिंग , जाति, धर्म या क्षेत्र नहीं देखता ; वह देखता है सिर्फ़ उसकी क्रय शक्ति को। इस रूप में वह एक प्रकार से सामाजिक समता की भी रचना कर रहा है। आप इससे कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर: आज हम जीवन के सभी क्षेत्रों जैसे अध्ययन, आवास, राजनीति, धार्मिक स्थानों आदि में एक प्रकार का भेद देखते हैं। लेकिन बाजार इन सबसे अछूता लगता है। बाजार का किसी लिंग, जाति, धर्म या क्षेत्र से कोई लेना-देना नहीं है। इसके लिए हर कोई केवल और केवल ग्राहक है। बाजार का संबंध व्यक्ति से नहीं बल्कि उस व्यक्ति की क्रय शक्ति से होता है। बाजार का सामाजिक समानता से कोई मतलब नहीं है, क्योंकि यह बस खरीदार की क्षमता को देखता है। यह एक घातक शक्ति के रूप में कार्य करता है क्योंकि बाजार का धर्म

कोई व्यक्ति नहीं है बल्कि पैसा है।

12:1:12:प्रश्न - अभ्यास - पाठ के साथ:5

आप अपने तथा समाज से कुछ ऐसे प्रसंग का उल्लेख करें-

(क) जब पैसा शक्ति के परिचायक के रूप में प्रतीत हुआ।

(ख) जब पैसे की शक्ति काम नहीं आई।

उत्तर: दोनों ही स्थिति आज के समय में पूर्ण है;

(क) किसी भी चलन के सामने एक उदाहरण नहीं टिक सकता है। हम आज देखते है कि कोई भी अपराधी निर्दोष साबित हो सकता है अगर उसके पास पैसा है। इसलिए हमे पैसा शक्ति के परिचायक के रूप में प्रतीत होता है।

(ख) बड़े-बड़े पैसे वाले लोग भी बीमारी से हार जाते है। असाध्य बीमारी के आगे उनका पैसा काम नहीं आता है। ऐसी स्थिति देखकर अहसास होता है कि पैसे की कोई शक्ति नहीं है।

PAGE 92, अभ्यास - पाठ केआसपास

12:1:12:प्रश्न - अभ्यास - पाठ के आसपास:1

बाज़ार दर्शन पाठ में बाज़ार जाने या न जाने के संदर्भ में मन की कई स्थितियों का ज़िक्र आया है। आप इन स्थितियों से जुड़े अपने अनुभवों का वर्णन कीजिए।

(क) मन खाली हो

(ख) मन खाली न हो

(ग) मन बंद हो

(घ) मन में नकार हो

उत्तर:

मन खाली हो: कभी बाजार जाने पर बिना किसी आवश्यकता के वस्तुएं खरीद लेते है। क्योँकि बाजार की चमक दमक से प्रभवित हो जाता हूँ।

मन खाली ना हो: माँ ने एक बार मुझसे कहा की मेले में जायो और वहाँ से कपडे लेकर आयो। मैं कपडे लेकर आया। मां ने भी मेरी खरीदारी की तारीफ की। मेरे दोस्तों ने पीछे से आकर मुझे मेले और उसके मज़ेदार भोजन, झूलों और प्रदर्शनी के बारे में बताया, तो मुझे ऐसा लगा कि वे कहीं और बात कर रहे हैं। जब मैं उन सभी से गुज़रा था, लेकिन मैंने उन पर ध्यान नहीं दिया क्योंकि मेरा दिमाग खाली था। मैं

सिर्फ जरूरत के काम पर केंद्रित था और मुझे यकीन था कि मुझे कुछ चीजें लेनी हैं।

मन बंद हो: बाजार जाने पर यदि मेरा मन उदास होता है तो मई बाजार घूम कर बिना कुछ लिए वापस आए जाता हूँ। जब मन उदास होता है तो बाजार के आकर्षण से कोई फर्क नहीं पड़ता है।

मन में नकार हो : नेताओं के भ्रष्टाचार के समाचार सुन-सुनकर मेरे मन में नकारात्मकता आ गयी है। किसी भी नेता के लिए मेरे मन में सम्मान नहीं है। सभी नेताओं को अब मैं संदेह की दृष्टि से देखता हूँ।

12:1:12:प्रश्न - अभ्यास - पाठ के आसपास:2

बाज़ार दर्शन पाठ में किस प्रकार के ग्राहकों की बात हुई है ? आप स्वयं को किस श्रेणी का ग्राहक मानते/मानती हैं?

उत्तर: लेखक जैनेंन्द्र कुमार ने बाज़ार दर्शन पाठ में कई प्रकार के ग्राहकों के विषय में चर्चा की है जो निम्नलिखित हैं:
खाली मन और खाली जेब वाले ग्राहक
भरे मन और भरी जेब वाले ग्राहक
क्रय-शक्ति का प्रदर्शन करने वाले ग्राहक
बाजारूपन को बढ़ावा देने वाले ग्राहक
अपव्ययी ग्राहक
भरे मन वाले ग्राहक
मितव्ययी और संयमी ग्राहक ।
मैं इनमें से भरे मन वाले ग्राहक की श्रेणी में हूँ जो आवश्यकता के अनुसार ही बाज़ार जाते हैं और केवल आवश्यक वस्तुएं ही खरीदते हैं।

12:1:12:प्रश्न - अभ्यास - पाठ के आसपास:3

आप बाज़ार की भिन्न-भिन्न प्रकार की संस्कृति से अवश्य परिचित होंगे। मॉल की संस्कृति और सामान्य बाज़ार और हाट की संस्कृति में आप क्या अंतर पाते हैं? पर्चेज़िंग पावर

आपको किस तरह के बाज़ार में नज़र आती है?

उत्तर: बाज़ार की भिन्न-भिन्न प्रकार की संस्कृति और उनमें आपस के अंतर को हम निम्न प्रकार से देख सकते हैं:

1. **मॉल की संस्कृति:** मॉल की संस्कृति विशेष संभावनाओं के साथ विकसित की गई। ये पूरे तरीके सेउन ग्राहकों के लिए तैयार किया गया है जो उच्च और उच्च मध्यम वर्ग से सम्बंधित है। मॉल की संस्कृति की ख़ासियत यह है कि हमें एक ही छत के नीचे तरह-तरह के सामान तो मिल ही जाते हैं लेकिन यहाँ लूट और चकाचौंध के साथ ही बाजारूपन अपने चरम पर होता है ।यहाँ का आकर्षण ग्राहकों को सामान खरीदने को मजबूर करता है।
2. **सामान्य बाज़ार:** ये बाज़ार उन ग्राहकों के अनुरूप है जो मध्यम वर्ग से सम्बंधित हैं ।सामान्य बाज़ार में लोगों की आवश्यकता के हिसाब से चीज़ें मिलती हैं ।यहाँ का आकर्षण मॉल संस्कृति की तरह नहीं होता।यहाँ ग्राहक और दुकानदार में सद्भाव होता है।
3. **हाट-संस्कृति:** निम्न वर्ग और ग्रामीण परिवेश के ग्राहकों का बाज़ार है ये।यहाँ न कोई दिखावा होता है न मोल-भाव की विशेष जद्दोजहद । बिलकुल सीधी,सरल और निष्कपट

संस्कृति है हाट-संस्कृति।

4. **पर्चेजिंग पॉवर** तो केवल मॉल संस्कृति में ही दिखाई देता है क्योंकि एक तो उसके ग्राहक उच्च आर्थिक वर्ग से सम्बंधित होते हैं,दूसरा वे लोग अपने लिए कम और दिखावे के लिए अधिक चीज़ें (ग़ैर ज़रूरी चीज़ें भी) लेते चले जाते हैं तो कभी बाज़ार के दिखावेपन के झांसे में आकर जेब ढीली कर बैठते हैं।

12:1:12:प्रश्न - अभ्यास - पाठ के आसपास:4

लेखक ने पाठ में संकेत किया है कि कभी-कभी बाज़ार में आवश्यकता ही शोषण का रूप धारण कर लेती है। क्या आप इस विचार से सहमत हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर: कभी-कभी जीवनोपयोगी वस्तुओं की अचानक से कमी आ जाती है (जैसे:रसोईगैस,दाल,चीनी,प्याज़,टमाटर आदि) तब दुकानदार मांग और आपूर्ति के सारे सिद्धांतों की सीमा पार कर जाता है और ग्राहक की आवश्यकताओं का भरपूर शोषण करता है। उस समय दुकानदार मनचाहे दामों पर इन वस्तुओं की बिक्री करते हैं।

12:1:12:प्रश्न - अभ्यास - पाठ के आसपास:5

स्त्री माया न जोड़े यहाँ माया शब्द किस ओर संकेत कर रहा है? स्त्रियों द्वारा माया जोड़ना प्रकृति प्रदत्त नहीं, बल्कि परिस्थितिवश है। वे कौन-सी परिस्थितियाँ हैं जो स्त्री को माया जोड़ने के लिए विवश कर देती है?

उत्तर: इस स्थान पर माया शब्द धन-संपत्ति की ओर संकेत कर रहा है I साधारणतया स्त्रियाँ ही माया अर्थात् रुपये-पैसे जोडती देखी जाती हैं किन्तु उनके इस जोड़-तोड़ के पीछे अनेक कारण होते हैं जैसे: एक स्त्री के सामने घर-परिवार सुचारू रूप से चलाने की,बच्चों की पढाई-लिखाई की,उनके शादी-विवाह की,रिश्ते-नातों को निभाने की ज़िम्मेदारी और असमय आने वाले संकट को संभालने आदि जैसी अनेक परिस्थितियां आती हैं जिनके कारण वे माया अर्थात रुपये-पैसे जोडती हैंI

PAGE 92, अभ्यास - आपसदारी

12:1:12:प्रश्न - अभ्यास - आपसदारी:1

ज़रूरत-भर जीरा वहाँ से ले लिया कि फिर सारा चौक उनके

लिए आसानी से नहीं के बराबर हो जाता है- भगत जी की इस संतुष्ट निस्पृहता की कबीर की इस सूक्ति से तुलना कीजिए-

चाह गई चिंता गई मनुआँ बेपरवाह
जाके कुछ न चाहिए सोई सहंसाह।
-कबीर

उत्तर: कबीर का यह दोहा भगत जी की संतुष्ट निस्पृहता पर पूरी तरह लागू होता है।कबीर कहते हैं कि व्यक्ति की इच्छा समाप्त होने पर चिंता भी समाप्त हो जाती है और मन हर परवाह से दूर हो जाता है ।शहंशाह वही होती जिसे किसी भी चीज़ की कोई चाहत नहीं रह जाती,जिन्हें कुछ नहीं चाहिए।भगत जी भी कुछ इसी स्वभाव के व्यक्ति हैं ।उनकी आवश्यकता भी सीमित हैं,वे बाज़ार के आकर्षण से दूर हैं । उनकी अपनी आवश्यकता पूरी हो जाने पर वे संतुष्ट हो जाते हैं।

PAGE 92, अभ्यास - भाषाकीबात

12:1:12:प्रश्न - अभ्यास - भाषाकी बात:1

विभिन्न परिस्थितियों में भाषा का प्रयोग भी अपना रूप

बदलता रहता है कभी औपचारिक रूप में आती है, तो कभी अनौपचारिक रूप में। पाठ में से दोनों प्रकार के तीन-तीन उदाहरण छाँटकर लिखिए।

उत्तर:

औपचारिक रूप

1. पैसा पॉवर है।
2. बाज़ार में एक जादू है।
3. एक बार की बात कहता हूँ ।

अनौपचारिकरूप:

1. बाज़ार है कि शैतान का जाल ।
2. उस महिमा का मैं कायल हूँ ।
3. पैसा उससे आगे होकर भीख मांगता है ।

12:1:12:प्रश्न - अभ्यास - भाषाकी बात:2

पाठ में अनेक वाक्य ऐसे हैं, जहाँ लेखक अपनी बात कहता है कुछ वाक्य ऐसे हैं जहाँ वह पाठक-वर्ग को संबोधित करता है। सीधे तौर पर पाठक को संबोधित करने वाले पाँच वाक्यों को छाँटिए और सोचिए कि ऐसे संबोधन पाठक से रचना पढ़वा लेने में मददगार होते हैं?

उत्तर:

1. कहीं आप भूल न कर बैठिएगा **।**
2. बाज़ार आमंत्रित करता है कि आओ,मुझेलूटो!और लूटो**।**
3. पानी भीतर हो; लू का लूपन व्यर्थ हो जाता है**।**
4. लू में जाना तो पानी पीकर जाना**।**
5. परन्तु पैसे की व्यंग्य शक्ति की सुनिए**।**

12:1:12:प्रश्न - अभ्यास - भाषाकी बात:3

नीचे दिए गए वाक्यों को पढ़िए।

(क) पैसा पावर है।

(ख) पैसे की उस पर्चेज़िंग पावर के प्रयोग में ही पावर का रस है।

(ग) मित्र ने सामने मनीबैग फैला दिया।

(घ) पेशगी ऑर्डर कोई नहीं लेते।

ऊपर दिए गए इन वाक्यों की संरचना तो हिंदी भाषा की है लेकिन वाक्यों में एकाध शब्द अंग्रेज़ी भाषा के आए हैं। इस तरह के प्रयोग को कोड मिक्सिंग कहते हैं। एक भाषा के शब्दों के साथ दूसरी भाषा के शब्दों का मेलजोल! अब तक आपने जो पाठ पढ़े उसमें से ऐसे कोई पाँच उदाहरण चुनकर

लिखिए। यह भी बताइए कि आगत शब्दों की जगह उनके हिंदी पर्यायों का ही प्रयोग किया जाए तो संप्रेषणीयता पर क्या प्रभाव पड़ता है।

उत्तर:

1. वहां के लोग **उम्दा** खाने के शौकीन थे ।
2. **पर्चेजिंग पॉवर** के अनुपात में आया है ।
3. पैसे को देखने के लिए **बैंक-हिसाब** देखिये पर **माल-असबाब**.मकान-कोठी तो अनदेखे भी दिखते हैं।
4. लोग **स्पिरिचुअल** कहते हैं ।
5. राह में बड़े-बड़े **फैंसीस्टोर** पड़ते हैं,पर पड़े रह जाते हैं ।

किसी भी भाषा को समृद्ध बनाने के लिए आगत शब्दों का प्रयोग किया जाता है ।इन पर यदि रोक लगा दी जाये तो भाषा की सम्प्रेषणीयता कमजोर और कठिन हो जाएगी । उदाहरण स्वरुप जैसे यदि ट्रेन को हम हिंदी में "लौह-पथ-गामिनी"प्लेटफार्म को "धक्-धक् पड़ाव" या सिगरेट को "धूम्रपान दंडिका" कहेंगे तो भाषा में दुरुहता आ जायेगी,अतःकोडमिक्सिंग के प्रयोग से भाषा में सहजता और विचारों के आदान-प्रदान में सुविधा रहती है।

12:1:12:प्रश्न - अभ्यास - भाषाकी बात:4

नीचे दिए गए वाक्यों के रेखांकित अंश पर ध्यान देते हुए उन्हें पढ़िए-

(क) निर्बल ही धन की ओर झुकता है।

(ख) लोग संयमी भी होते हैं।

(ग) सभी कुछ तो लेने को जी होता था।

ऊपर दिए गए वाक्यों के रेखांकित अंश 'ही', 'भी', तो निपात हैं जो अर्थ पर बल देने के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं। वाक्य में इनके होने-न-होने और स्थान क्रम बदल देने से वाक्य के अर्थ पर प्रभाव पड़ता है, जैसे-

मुझे भी किताब चाहिए। (मुझे महत्त्वपूर्ण है।)

मुझे किताब भी चाहिए। (किताब महत्त्वपूर्ण है।)

आप निपात (ही, भी, तो) का प्रयोग करते हुए तीन-तीन वाक्य बनाइए। साथ ही ऐसे दो वाक्यों का निर्माण कीजिए जिसमें ये तीनों निपात एक साथ आते हों।

उत्तर:

निपात: "ही"

क. तुम्हें भी आज ही जाना है।

ख. मैं जल्दी ही गाड़ी मंगवा लूँगा।

ग.तुम ही को खाना है ये ।

निपात: "भी"

क. चाय के साथ नमकीन भी चलेगा।

ख. रमेश बाबू अब भी नहीं समझ पाए।

ग.तुम अभी भी नहीं देख रहे हो।

निपात: "तो"

क. मैंने तुम्हेजो काम करने को दिया था,वह कर तो दिया।

ख. यानी महल तो था लेकिन संगमरमर का नहीं था।

ग.मेरे पास जूते थे तो सही लेकिन मैंने रखे नहीं ।

तीनोंनिपातों का प्रयोग:

1. तुम घर में **ही** रहो क्योंकि माँ **भीतो** चली गई है।
2. मैं **तो** वहाँ से गुज़र **ही** रहा था कि खन्ना**भी** मिल गया ।
3. अमृता **भी** गाना **तो** गाएगी **ही**।

PAGE 92, अभ्यास - चर्चा करें

12:1:12:प्रश्न - अभ्यास - चर्चा करें :1

पर्चेज़िंग पावर से क्या अभिप्राय है?

बाज़ार की चकाचौंध से दूर पर्चेज़िंग पावर का साकारात्मक उपयोग किस प्रकार किया जा सकता है? आपकी मदद क

लिए संकेत दिया जा रहा है-

(क) सामाजिक विकास के कार्यों में।

(ख) ग्रामीण आर्थिक व्यवस्था को सुदृढ़ करने में......।